Name of the college - APSM College, Barauni, Begusarai
Name - Dr. Bharti Kumari (G.T.)
Deptt - AIH&C
Lession/plan - B.A. AIH&C (H), Part-I, Paper-I
Date - 06-04-2021
Name of the topic - Dakkan Arts of Sinhavalokan.

दक्कन कला का सिंहावलोकन

दक्षिण भारत बौद्धों का भी एक प्रसिद्ध केन्द्र था। अशोक के समय से ही इस क्षेत्र में बौद्धकला का विकास प्रारंभ हो चुका था। क्योंकि कहा जाता है कि उसने देश के विभिन्न भागों में बहुत सारे स्तूप बनवाएँ। कृष्णा और गोदावरी नदी के बीच बौद्धधर्म का एक प्रधान केन्द्र था, "नागार्जुनीकोंडा"। वहाँ एक काफी बड़े आकार का स्तूप था, जिसका व्यास लगभग 162 फीट था, और उसके ऊपर नक्काशीदार संगमरमर का आवरण था, और उसमें जातक कथाओं के उद्‌भावित चित्रण मिलते हैं। यह स्तूप उच्च धार्मिक आदर्शों एवं विकसित कलात्मक भावनाओं पर आधारित स्थापत्य कला की शैली का प्रतिनिधित्व करता है। स्तूप और चैत्य वहाँ की कलाओं की विशेषता रही है। चैत्यों में भाजा, बेडसा, पितलखोरा, कार्ले, कोण्डने, नासिक, जुन्नार, एवं अजंता की गुफाएँ एक दर्शनीय समूह है। और ये सभी ई.पू. प्रथम दो शताब्दियों की हैं। कार्ले का चैत्य काफी भव्य और विस्तृत है। अजंता की तेरहवीं गुफा आरंभिक बौद्ध विहार का उत्तम उदाहरण है।

P.T.O.

आन्ध्र - सातवाहन काल में कला के क्षेत्र में उत्तरोत्तर विकास हुआ ; परन्तु आंध्रों के पतन के बाद कलात्मक प्रवृत्ति का भी पतन हुआ।

वाकाटक शासनकाल में दक्षिण की कला का पुनः विकास हुआ। इस काल के अजंता की विहारों में पहली गुहा सबसे बड़ी है। जिसमें एक प्रामेड्य, एक बरामदा, चारों ओर मंजिलों से युक्त एक हाल, एक पूर्व कक्ष और बुद्ध की विशालकाय उत्कीर्ण मूर्ति से युक्त प्रतिमागृह है। ये सभी मूर्तिकला एवं चित्रकला से अलंकृत है।

चालुक्य शासनकाल में ब्राह्मण धर्म का पुनर्जागरण हुआ और उन्होंने अपनी राजधानी वातापी में उस धर्म के शिलामंदिर बनवाएँ। चालुक्य शासक लोग धर्मसहिष्णु भी थें। अतः बौद्ध मंदिरों का निर्माण भी उनके समय में हुआ। परंतु राष्ट्रकूटों के बड़े पैमाने पर देवालयों का निर्माण किया और बौद्ध विहारों को भी अपने धर्म के मंदिरों में परिवर्तित किया। एलोरा में ऐसे मंदिर हैं, जो सम्पूर्ण विश्व में इस प्रकार की स्थापत्य कला के अद्वितीय उदाहरण है। उनका अलंकारी विवरण विस्मयकारी है। कैलाश मंदिर एक ही चट्टानशिला से बना हुआ है। दो ऊँचे ध्वजस्तंभ भी इसकी गरिमा को बढ़ाते हैं। इसमें रामायण और महाभारत की घटनाएँ चित्रित है। यह मंदिर हाथी की पीठ पर आधारित रूप के रूप में संयोजित है। इसका निर्माणकर्ता राष्ट्रकूट शासक कृष्ण तृतीय था। इसकी शैली मामलपुरम के रथों की शैली से प्रेरित लगती है। इसके साथ P.T.O

Scanned with CamScanner

और भी अनेक मंदिर हैं। 973ई. में तैल द्वितीय ने राष्ट्रकूटों को खदेड़कर कल्याणी में अपनी सत्ता की स्थापना की। और वहाँ उन्होंने 1161 ई. तक शासन किया। आंध्र में काकतीय लोग भी इस चालुक्य नरेश के सामंत थे। जब कलचुरियों ने चालुक्यों को पराजित किया, तब काकतीय वंश स्वतंत्र हो गया। काकतीय का संबंध चोलों से भी था! और चालुक्यों से भी। यही कारण है कि उनके समय में मंदिरों के निर्माण में उत्तर एवं दक्षिण भारतीय शैलियों का सुंदर सम्मिश्रण हुआ। पट्टदकल का लोकेश्वर अथवा विरूपाक्ष मंदिर दक्षिण के प्राचीनतम संरचनात्मक मंदिरों में से एक है। और वह अपनी पूर्ववर्ती कलाकृति अर्थात कांची के राजसिंहेश्वर मंदिर से बहुत मिलता है। शिखर पल्लवीय अथवा दक्षिण भारतीय विशेषता है।

दक्षिणी

मंदिरों के स्तंभों में अनेक प्रकार की कारीगरी एवं कलात्मक प्रभाव देखे जाते हैं – वे उत्तरी एवं दक्षिणी भारत के मंदिरों के स्तंभों से अलग है। ये स्तंभ पत्थर तराश कर बनाये गये हैं। तथा सुन्दर कलाकृतियों से अलंकृत हैं। इतंगिका महादेव मंदिर दक्कन कला का अन्यतम उदाहरण माना जा सकता है। इसका निर्माण विक्रमादित्य पञ्चम के एक दंडनायक के द्वारा 1112ई. में हुआ था। और इस मंदिर को देवालय चक्रवर्ती कहा जाता था।

मूर्तिकला के क्षेत्र में काफी प्रगति हुई। चोलों से प्राप्त मूर्तियाँ इसके प्रामाणिक उदाहरण हैं 'अमरावती शैली' के नाम से भी प्रसिद्ध हो एक कलाकृति में प्रदर्शित परवाहा अपनी वेशभूषा, मुखाकृति (स्व.

तथा मुद्रा में प्रदर्शित पूर्णरूपेण भारतीय है। अधिकांश स्तंभों पर जातक कथाएँ उत्कीर्ण हैं। अमरावती की मूर्तियाँ साँची और भारहुत की अपेक्षा गुप्तकाल के अधिक निकट लगती हैं।

अजंता में बुद्ध को धर्मचक्र मुद्रा में उपस्थित किया गया है और दूसरी उल्लेखनीय मूर्ति है। बुद्ध के निर्वाण दृश्य की। अजंता की मूर्तिकला में अनेक नागराज निरूपित हैं। पशुओं में मकरों एवं हंस का निरूपण उल्लेखनीय है। एलोरा का दशावतार मंदिर पहले बौद्ध चैत्य था। इस मंदिर में भैरव की मूर्ति है। जो भयोत्पादक ढंग से आगे बढ़ती हुई प्रतीत होती है। वैष्णव मूर्तिकला में भी वही निष्ठुर एवं दानविक भाव है — शैव और वैष्णव की वास्तविक कला के उपर्युक्त दोनों चित्र विशिष्ट उदाहरण हैं। जैन मूर्तियाँ भी दक्कन से मिलती हैं।

दसवीं से 13वीं शताब्दियों की दक्कन की मूर्तिकला के सात विशिष्ट उदाहरण इस प्रकार बताए जा सकते हैं — इनमें वारंगल जिले में रामप्प झील के निकट प्रसिद्ध मंदिर से एक करीम नगर जिले में पेडमपेट के विष्णुमंदिर से और दो नलगौंड के पांगुल जलाशय के किनारे पर स्थित पंचीश्वर के मंदिर से। ये सभी मूर्तियाँ कला की दृष्टिकोण से उत्कृष्ट हैं। मूर्तिकार का कौशल स्पष्ट है। वह मूर्तियों में यौवन एवं लय का सौंदर्य प्रदर्शित करने में ~~समर्थ~~ समर्थ रहा है — प्रचंड उन्मत्तता का भाव। यौवनपूर्ण वक्ष के आकर्षण की प्रमुखता, शरीर के रेखांकण में हर्षपूर्ण लोच। कूल्हों की मांसलता — मानो वे जीवन के बाहुल्य की ओर इंगित करने के लिए हैं।

P.T.O.

चित्रकारी के क्षेत्र में अजंता की देन सर्वव्यापी है। गुफा संख्या 2, 10, 16, 17 में चित्रकला दैविक सभ्यता एवं मानवीय भावनाओं एवं प्रेम से युक्त है। प्रथम गुफा में बुद्ध के संसार-त्याग की कथा है। सोलहवीं गुफा में जीवन एवं बचपन तथा संघीय जीवन के सर्वेक्षु चित्र है। सत्रहवीं गुफा में पूर्वजन्म के विभिन्न जन्मों का चित्रण है। राजकुमार के चित्रण में सांसारिक जीवन एवं धार्मिक विशिष्टता दोनों के ही चिन्ह है। अजंता में नारी की विभिन्न आनंदात्मक मुद्राओं में चित्रित किया गया है। सत्रहवीं विशिष्टता दोनों के ही चिन्ह है। अजंता में नारी की विभिन्न आनंददायक मुद्राओं में चित्रित किया गया है। सत्रहवीं गुफा में लोलुप ब्राह्मण का चित्रांकन है। मानवीय आकृतियों की वैविध्यपूर्ण अभिव्यक्तियों में तथा नारियों के सुंदर केश-विन्यास अथवा उनके वस्त्राभूषणों के सुंदर डिजाइनों के वैविध्यपूर्ण अभिव्यक्तियों में तथा नारियों के सुंदर केश-विन्यास अथवा उनके वस्त्राभूषणों के सुंदर डिजाइनों के आकर्षक प्रस्तुतीकरण के अत्यधिक सुंदर अलंकरण कार्य में अजंता के अनाम रक्षित चित्रकारों की दक्षता की प्रशंसा करनी चाहिए।

बाघ गुफा के चालुक्यों की चित्रकला अजंता से मिलती है। कैलाश की ब्रांडेड के आंतरिक छत में भी चित्रकला की कुछ रहे हैं। यहाँ के भगवान के मार और अजंता के बोधिसत्व के सार में अपूर्व साम्य है। एलोरा में जैन मंदिरों की इन्द्रसभा कि समूह की आंतरिक

छते भी चित्रकारी यानि कि चित्रकला शुद्ध रूप से नकल है, और वह किसी सृजनात्मक शक्ति को प्रकट नहीं करती।

अजंता की चित्रकला की प्रमुख विशेषता उसकी मानवीय भावनाएँ है और उनमें विलासिता का कोई भाव नहीं है। धार्मिक अंश ने उसे पवित्र स्वर प्रदान किया है। धार्मिक उपदेशों की पृष्ठभूमि में सारा जीवन ही कटु सत्यों को प्रदर्शित किया गया है। अभिव्यक्ति की विविधता में अजंता की चित्रकला अद्वितीय है। इसकी कीर्ति अफगानिस्तान, मध्य एशिया, चीन, लंका, जावा, एवं जापान में फैली, परंतु अपने यहाँ वह लुप्तप्राय हो चली थी।

भारती कुमारी
06-04-2024